Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 September-October 2025 / VOL -02 ISSUE-II

06

रहमान राही की कविता में कश्मीरी जनजीवन का चित्रण

डॉ. संतोष गायकवाड़
उपप्रचार्य एवं सहयोगी प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
सोनुभाऊ बसवंत महाविद्यालय,शहापुर,
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

शोध सारांश:

रहमान राही की कविताएँ कश्मीर के प्राकृतिक परिवेश, खूबसूरत घाटियाँ, झरने, बर्फ़, खेत और नदियाँ, सामाजिक जीवन, गाँव और शहर, लोक परंपराएँ और भाषा-व्यवहार, राजनीतिक संघर्ष, विस्थापन आदि को समेटे हुए हैं। उनकी कविताएँ न केवल सुंदर दृश्यों का वर्णन करती हैं, बल्कि उस सौंदर्य में छिपे संघर्ष, पीड़ा, परिवर्तन और विसंगति को भी उजागर करती हैं। इस प्रकार, कश्मीर की धरती उनकी काव्यात्मक नींव का आधार बनती है। कश्मीर की घाटियाँ, बर्फीले पहाड़, झरने, हरियाली, बाग-बगीचे, खेत-खलिहान और लोगों का श्रम, आदि रहमान राही की कविताओं में बार-बार दिखाई देते हैं। उनकी कविताओं में प्राकृतिक वातावरण न केवल पृष्ठभूमि बन गया है, बल्कि जीवन का स्रोत, स्मृति का स्थान और जन-मानस का एक अभिन्न अंग बन गया है। कश्मीरी जीवन न केवल स्वाभाविक है, बल्कि इसमें सामाजिक संरचना, समय का प्रवाह, ऐतिहासिक परिवर्तन, मानवीय भावनाएँ और सम्मान व गौरव का संघर्ष भी समाहित है। राही की कविताएँ इन पहलुओं को उजागर करती हैं। कश्मीर विविध सामाजिक समूहों का वह स्थल है, जिनमें ग्रामीण और शहरी, पहाड़ी और नदी तटीय तथा घाटी समुदाय शामिल हैं। यह विविधता उनकी कविता में परिलक्षित होती है।

शब्द कुंजी: कश्मीर, लोक-परंपरा, घाटियाँ, हरियाली, बर्फीले पहाड़, जंगल, चरागाह, आदि।

प्रस्तावना:

कश्मीर अपने अनूठे परिदृश्य, लोक संस्कृति, सामाजिक परिवेश और ऐतिहासिक संघर्षों के कारण साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध क्षेत्र रहा है। जब हम कश्मीरी भाषा और साहित्य के महत्व पर विचार करते हैं, तो हमें लोगों के जीवन, भाषा, लोक चेतना, प्रकृति से संबंध, सामाजिक व्यवस्था और राजनीतिक प्रतिमानों पर गहन चिंतन मिलता है। इस संबंध में, महान कश्मीरी कवि रहमान राही ने अपने काव्य प्रयासों के माध्यम से न केवल भाषा को एक नया रूप दिया, बल्कि कश्मीरी जीवन का एक विस्तृत चित्र भी प्रस्तुत किया। रहमान राही को कश्मीरी कविता के सबसे प्रभावशाली कवियों में से एक माना जाता है; उन्हें 2007 में भारत के सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान, ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उनकी कविताओं में कश्मीरी भाषा के प्रति उनका प्रेम, उसकी लोक संस्कृति के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और उनकी सामाजिक-राजनीतिक संवेदनशीलता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। रहमान राही की कश्मीरी कविताएँ कश्मीरी जीवन - उसके मूल्यों, जीवनशैली, सामाजिक संरचना, राजनीतिक परिवेश, भाषाई संबंधों और सामाजिक-राजनीतिक चेतना को दर्शाती हैं।

रहमान राही का जन्म 6 मई 1925 को श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर में हुआ था। उन्होंने मुख्यतः कश्मीरी भाषा में कविताएँ, अनुवाद और आलोचनाएँ लिखीं। उन्होंने न केवल कश्मीरी भाषा को एक साहित्यिक आधार प्रदान किया, बल्कि उस भाषा के माध्यम से कश्मीरी लोगों के दर्द और आनंद, चेतना और विरोध, प्रेम और निराशा को भी अभिव्यक्त किया। उन्होंने उर्दू में भी साहित्यिक रचनाएँ कीं, लेकिन उनकी प्राथमिक पहचान कश्मीरी कविता के माध्यम से बनी। पद्मश्री, साहित्य अकादमी पुरस्कार और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित राही का साहित्य कश्मीर की सांस्कृतिक और भाषाई पहचान से गहराई से जुड़ा है।

रहमान राही ने अपनी मातृभाषा कश्मीरी को एक अभिव्यक्ति-माध्यम के रूप में चुना और उसमें न सिर्फ पारंपरिक लोकभाषा के तत्व अपनाए बल्कि आधुनिक काव्यशैली, रूपक, छन्द, प्रतीक तथा सामाजिक चेतना का समावेश भी किया। उनका मानना था कि भाषा आत्मा का स्वरूप है, और कश्मीरी भाषा उनके लिए सिर्फ संचार का माध्यम नहीं, बल्कि चेतना-साधना का आधार बनी। उन्होंने कश्मीरी जबान के संदर्भ में लिखा है-

"ऐ मेरी कश्मीरी ज़बान
मुझे तेरी क़सम
तू मेरी चेतना
तू ही मेरी आत्मा
तूने चिरंतन चश्मे में
मुझे अंदर-बाहर से धो डाला"[१]

इस प्रकार वे न केवल भाषा का संरक्षण कर रहे थे, बल्कि सांस्कृतिक जीवन के अनुभव को भी भाषा के माध्यम से प्रस्तुत कर रहे थे।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 September-October 2025 / VOL -02 ISSUE-II

राही की कविताएँ कश्मीर के प्राकृतिक परिवेश, खूबसूरत घाटियाँ, झरने, बर्फ़, खेत और नदियाँ, सामाजिक जीवन, गाँव और शहर, लोक परंपराएँ और भाषा-व्यवहार, राजनीतिक संघर्ष, विस्थापन आदि को समेटे हुए हैं। उनकी कविताएँ न केवल सुंदर दृश्यों का वर्णन करती हैं, बल्कि उस सौंदर्य में छिपे संघर्ष, पीड़ा, परिवर्तन और विसंगति को भी उजागर करती हैं। इस प्रकार, कश्मीर की धरती उनकी काव्यात्मक नींव का आधार बनती है। कश्मीर की घाटियाँ, बर्फीले पहाड़, झरने, हरियाली, बाग-बगीचे, खेत-खलिहान और लोगों का श्रम - ये सब रहमान राही की कविताओं में बार-बार दिखाई देते हैं। प्राकृतिक वातावरण न केवल पृष्ठभूमि बन गया है, बल्कि जीवन का स्रोत, स्मृति का स्थान और जन-मानस का एक अभिन्न अंग बन गया है। कश्मीरी देहात का सजीव चित्र उनकी 'दो कविताएँ' नामक अनुवादित कविता की काव्य पंक्तियों में देखा जा सकता है -

"पूरे जंगल को आग ने भस्म कर डाला
भेड़ों की चर्बी जली, चरागाह राख हुआ
निपट मूर्ख गड़रिये की न साँस रुकती है
न उसने अपने नाखून कुतेरे"[२]

यहाँ घास के मैदान, चरागाह, जंगल उस लोक परिदृश्य से जुड़े हैं जो कश्मीर के गाँवों में जीवन को जोड़ता है। प्राकृतिक परिवेश के माध्यम से कवि लोक श्रम, पशुपालन, पशुपालन और खेतों के माध्यम से जीवन के संघर्षों को प्रकट करता है। इस प्रकार, प्राकृतिक परिवेश और लोक जीवन मिलकर एक ऐसा यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत करते हैं जहाँ न केवल सौंदर्य बल्कि जीवन के संघर्ष, समय का प्रवाह और परिवर्तन की प्रवृत्ति भी उस सौंदर्य में प्रतिबिम्बित होती है।

कश्मीरी भाषा का प्रयोग, उसकी बोली, लोकगीतों की परंपरा, कहावतें और भाषा में आत्म-चेतना - ये सभी रोचक विषय हैं। रहमान राही की कविताएँ इन्हीं बातों को दर्शाती हैं। रवींद्र कालिया लिखते हैं- "रहमान राही ने कश्मीरी को एक नया मुहावरा दिया और अपने योगदान से उसे समृद्ध बनाया कि कश्मीरी अन्य भाषाओं के भारी दबाव को बर्दाश्त करते हुए अपनी अलग पहचान अक्षुण्ण रख पायी है।"[3] उन्होंने कश्मीरी को केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक चेतना, अभिव्यक्ति का माध्यम और लोक जीवन का एक अंग माना। उनकी कविताओं में लोक संस्कृति, लोकगीत, लोककथाएँ और कहावतें प्रतिबिंबित होती हैं। जन-जीवन की भाषिक आत्मीयता, भाषा और बोली की सहजता और ग्रामीण जीवन की लोकभाषा उनकी कविताओं को लोक-प्रेरित बनाती है, जिससे पाठक को ऐसा लगता है कि वह सामान्य जीवन का एक दृश्य देख रहा है। ऐसा ही एक सुंदर दृश्य 'बेआवाज गूँज' कविता में उभरकर आया है-

"आकाशीय शिखर मालाओं के ऊपर उड़ते सफ़ेद पंछी
गहरे सब्जसायों में अनार रंग जुगनू
वह पाताल की मादक खुशबू
यह चीड़ की ऊपरी टहनी से गुजरने वाला झोंका
पारद लहर बन आकाश छू जाए"[४]

इस प्रकार भाषा, लोक संस्कृति और आत्म-सम्मान के तीन तत्व मिलकर कश्मीरी जीवन का सामाजिक-सांस्कृतिक चित्रण संभव बनाते हैं।

कश्मीरी जीवन न केवल स्वाभाविक है, बल्कि इसमें सामाजिक संरचना, समय का प्रवाह, ऐतिहासिक परिवर्तन, मानवीय भावनाएँ और सम्मान व गौरव का संघर्ष भी समाहित है। राही की कविताएँ इन पहलुओं को उजागर करती हैं। कश्मीर विविध सामाजिक समूहों का घर है, जिनमें ग्रामीण और शहरी, पहाड़ी और नदी तटीय तथा घाटी समुदाय शामिल हैं। यह विविधता उनकी कविता में परिलक्षित होती है। इसी प्रकार, समय का प्रवाह भी लोगों के जीवन में स्पष्ट दिखाई देता है। मानवीय चेतना के विषय - गहन संघर्ष, सामाजिक अन्याय, अस्मिता की खोज, विस्थापन और अलगाव - भी उनकी कविता में गहराई से प्रकट होते हैं-

"उसने सारी जंग, अधूरी छोड़ कर
हर सीमा पर कटे-फटे सर
सिरहाने समेटे, और देखा :
दिशाएँ धूलि-धूसर
घड़ी की टिक-टिक
समय के वक्ष की खोज-यात्रा में चली
पाताल का सर्प लेपता स्वर्ग
बूढ़े कुत्ते की आँख में खिली मासूम नरगिस"[५]

'हवा' कविता की उपरोक्त पंक्तियाँ विडंबना, संघर्ष और मानवीय जीवन परिस्थितियों के प्रभाव को दर्शाती हैं। कवि जीवन के सतही सुखों के साथ-साथ छिपे हुए दर्द, इच्छाओं और निराशाओं, सामूहिक स्मृतियों और व्यक्तिगत दुखों को भी काव्यात्मक रूप से प्रस्तुत करता

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 September-October 2025 / VOL -02 ISSUE-II

है। इस प्रकार, सामाजिक संरचना, मानवीय चेतना और समय का प्रवाह मिलकर लोक जीवन को न केवल एक बाह्य दृष्टिकोण के रूप में, बल्कि एक अनुभवात्मक और संवेदनशील क्षेत्र में भी प्रस्तुत करते हैं।

कश्मीर राजनीतिक रूप से एक जटिल क्षेत्र है – विविध राज्य नीतियाँ, पहचान संबंधी विवाद, विस्थापन और भाषाई व सामाजिक दबाव दिखाई देते है। यह पहलू राही की कविताओं में भी गहराई से मौजूद है। कश्मीरी भाषा के प्रति प्रेम के कारण, वे भाषा के दबाव, पहचान के संकट और भाषा के संरक्षण के मुद्दों को उठाते हैं। उनकी कविताओं का अंतर्निहित स्वर मानवीय पीड़ा है। राजनीतिक परिवर्तन, राज्य की समस्याओं और सामाजिक अस्थिरता ने कश्मीरी जीवन को प्रभावित किया है; राही इन संदर्भों को अपनी कविताओं में समाहित करते हैं, जीवन को सार्वजनिक परिस्थितियों प्रतिबिंब को चेतना के स्रोत में परिवर्तित करते हैं। वे इन्हें व्यक्तिगत अनुभवों के बजाय सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंडों के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार, राही की कविताएँ हमें यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष सार्वजनिक जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं। उनकी एक अनुवादित कविता 'दो कविताएँ' का उदाहरण निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है-

"संसार की तोप के मुख पर रखा कबूतर का अंडा
हाँ, पर कश्मीरी कवि, संगीतज्ञ गा रहे हैं
'हमारा वतन, सबसे प्यारा वतन'
मनुष्य समय के चक्करों में, दन्त-चक्रों में फँसे
हाँ, यदि आपका अनुरोध है तो
मैं भी माना लूँगा खुद को
निशात बाग के कोमल पुष्प के लिए इतराता आऊँगा।"[६]

यहाँ केवल लोक जीवन का चित्रण नहीं है, बल्कि एक राजनीतिक प्रतीक - तोप और कबूतर का अंडे के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। कवि का कहना है कि कश्मीरी कवि और संगीतकार वर्तमान विश्व परिस्थितियों में अपनी भाषा, अपनी मातृभूमि और अपनी मानवीय भावना की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं। अंत में, 'हमारा देश, हमारा प्यारा देश' कहकर कवि लोकगीत में सामूहिक गौरव और लालसा को समाहित करता है। यह कविता न केवल दृश्यों का चित्रण करती है, बल्कि मानवीय भावनाओं को भी अभिव्यक्त करती है – 'मूर्ख गड़ेरिया', 'कबूतर का अंडा', 'हमारा देश' ये विषय मानव जीवन के प्रत्यक्ष अनुभव को कविता की भावना से जोड़ते हैं। कवि कहते हैं कि मानव जीवन केवल शांति और सुधार से ही नहीं, बल्कि अशांति और लालसा से भी भरा है।

निष्कर्ष

रहमान राही की कश्मीरी कविताएँ कश्मीरी जीवन के बहुमुखी स्वरूप - प्राकृतिक परिवेश, भाषा, लोक संस्कृति, सामाजिक संरचना, मानवीय चेतना और राजनीतिक व सामाजिक पहचान को चित्रित करती हैं। उनकी कविताएँ केवल सौंदर्य और वैभव का प्रतिबिम्ब ही नहीं हैं, बल्कि जीवन के अनुभवों, सामाजिक चिंतन और भाषा-प्रेम का सम्मिश्रण हैं। कश्मीर में विकसित इस काव्य परंपरा ने भाषा और संस्कृति के संदर्भ में अपना महत्व बढ़ाया है। राही की कविताएँ पाठकों और शोधकर्ताओं को प्रेरित करती रहती हैं। यदि कश्मीरी भाषा और संस्कृति को जीवित रखना है और लोगों के जीवन की इन आवाज़ों को भविष्य में सुना जाना है, तो ऐसे कवियों का अध्ययन आवश्यक है। अतः यह कहा जा सकता है कि रहमान राही ने न केवल एक कवि के रूप में महान योगदान दिया, बल्कि कविता के रूप में कश्मीरियों के जीवन को एक वैश्विक स्मृति भी प्रदान की। उनकी कविताएँ जीवन और कविता के बीच एक सेतु हैं - और उस सेतु पर खड़े होकर हम कश्मीर के लोगों के जीवन की आवाज़ें सुन सकते हैं।

संदर्भ सूची:

१. सं. रैणा गौरीशंकर, रहमान राही की प्रतिनिधि कविताएँ, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण : २००९, भूमिका से
२. वही, पृ. १०७
३. वही, पृ. ११८
४. वही, पृ. १७
५. वही, पृ. १०६
६. वही, पृ. १०७